

प्रश्न: राजस्थान की अर्थव्यवस्था की मूलभूत विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए और इसकी प्रमुख चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है और इसकी अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक विपदाओं (जैसे जल की कमी और रेगिस्तानी भूगोल) तथा समृद्ध सांस्कृतिक एवं खनिज विरासत का एक अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है। राज्य की अर्थव्यवस्था की मूलभूत विशेषताओं और चुनौतियों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

1. कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था और मानसून पर निर्भरता

राजस्थान की अर्थव्यवस्था की प्रकृति मुख्य रूप से कृषि और संबंधित क्षेत्रों (पशुपालन, वानिकी) पर आधारित है।

- **आजीविका का मुख्य आधार:** राज्य की एक बड़ी आबादी (लगभग 62%) प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से

कृषि पर निर्भर है।

- **मानसून का जुआ:** राज्य में कृषि का एक बड़ा भाग (लगभग 75% बोया गया क्षेत्र) वर्षा पर निर्भर करता है, इसलिए कृषि को 'मानसून का जुआ' कहा जाता है। वर्षा की कमी या अनिश्चितता का सीधा असर सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) पर पड़ता है।
 - **पशुधन का महत्व:** विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। राजस्थान भारत का सबसे बड़ा ऊन उत्पादक राज्य है और यह दूध उत्पादन में भी अग्रणी स्थान रखता है, जो ग्रामीण आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।
-

2. खनिज संपदा का भंडार (खनिजों का अजायबघर)

राजस्थान खनिज संसाधनों के मामले में देश का दूसरा सबसे समृद्ध राज्य है, जिसे 'खनिजों का अजायबघर' भी कहा जाता है।

- **एकाधिकार वाले खनिज:** यह सीसा (Lead), जस्ता (Zinc), ताँबा (Copper), कोयला (Coal) और गैस (Gas) है।

(Zinc), चांदी (Silver), सेलेनाइट और वोलेस्टोनाइट के उत्पादन में लगभग एकाधिकार रखता है।

- औद्योगिक आधार: खनिज-आधारित उद्योग (जैसे सीमेंट और मार्बल) राज्य की अर्थव्यवस्था के औद्योगिक क्षेत्र का एक मजबूत आधार हैं।
 - ईंधन खनिज: यह राज्य पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस का भी एक महत्वपूर्ण उत्पादक बन गया है, जिससे राज्य के गैर-कर राजस्व में बड़ा योगदान होता है।
-

3. सेवा क्षेत्र का बढ़ता प्रभुत्व और पर्यटन का विशेष महत्व

हाल के वर्षों में राजस्थान की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक (लगभग 45-50%) हो गया है, जो इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

- पर्यटन: पर्यटन सेवा क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण उपक्षेत्र है। राज्य के ऐतिहासिक किले, महल (जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर) और सांस्कृतिक विरासत पर्यटकों को

है और हस्तशिल्प उद्योग को बढ़ावा मिलता है।

- बुनियादी ढाँचा: व्यापार, परिवहन, संचार और वित्तीय सेवाएँ भी GSDP में तेजी से योगदान दे रही हैं।
-

4. औद्योगिक पिछड़ेपन की चुनौती

प्राकृतिक और संरचनात्मक बाधाओं के कारण औद्योगिक विकास लंबे समय तक राष्ट्रीय औसत से कम रहा है, हालाँकि अब सुधार हो रहा है।

- बुनियादी ढाँचे का अभाव: जल संकट, रेल परिवहन में डबल ट्रैक की कमी और कुछ क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति की कमी वृहद उद्योगों के विकास में बाधा डालती रही है।
- कच्चे माल की कमी: कच्चा लोहा और कोयला जैसे महत्वपूर्ण ईंधन खनिजों का अभाव बड़े उद्योगों की स्थापना को कठिन बनाता है।
- नया विकास: हाल ही में सौर ऊर्जा उत्पादन में राज्य ने देश में पहला स्थान प्राप्त किया है, जो औद्योगिक

चुनौतियों से निपटने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

5. सामाजिक और जनसांख्यिकीय चुनौतियाँ

- **उच्च जनसंख्या वृद्धि और बेरोजगारी:** राजस्थान की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर अधिक रही है, जिससे संसाधनों पर दबाव बढ़ता है और बेरोजगारी की समस्या गंभीर बनी हुई है, खासकर ग्रामीण और युवा वर्ग में।
- **वित्तीय साधनों का अभाव:** आर्थिक विकास के लिए पर्याप्त वित्तीय साधनों की कमी और राज्य पर बढ़ते कर्ज का भार एक बड़ी राजकोषीय चुनौती है।
- **क्षेत्रीय असमानता:** मरुस्थलीय और अरावली क्षेत्रों में भौगोलिक बाधाओं के कारण विकास का वितरण असमान है, जिससे क्षेत्रीय विषमताएँ उत्पन्न होती हैं।

राजस्थान की अर्थव्यवस्था इन विशेषताओं और चुनौतियों का सामना करते हुए एक विकासशील अर्थव्यवस्था है, जिसमें कृषि, खनिज और पर्यटन प्रमुख आधार स्तंभ हैं।

प्रश्न: राजस्थान के प्राकृतिक संसाधनों—भूमि, जल, पशुधन और वन्यजीव—की विशेषताओं, महत्व और इनसे जुड़ी चुनौतियों का विस्तार से विश्लेषण कीजिए।

1. भूमि (Land) संसाधन और मृदा

राजस्थान देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 10.4 प्रतिशत भाग है। यहाँ की भूमि संसाधन की मुख्य विशेषताएँ और चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं:

- **भौगोलिक विविधता:** राज्य की भूमि में अत्यधिक विविधता है। पश्चिमी भाग में थार मरुस्थल के कारण रेतीली/बलुई मृदा (एरिडोसॉल्स) की प्रधानता है, जबकि पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी भाग में जलोढ़ और काली मृदा (वर्टीसॉल्स) पाई जाती है, जो कृषि के लिए अधिक उपजाऊ हैं।
- **चुनौती - मरुस्थलीकरण (Desertification):** भूमि संसाधन के सामने सबसे बड़ी चुनौती मरुस्थलीकरण का प्रसार है। अत्यधिक चराई, वनों की कटाई और

जलवायु परिवर्तन के कारण भूमि की उपजाऊ शक्ति

जलवायु परिवर्तन के कारण भूमि की उत्पादकता घट रही है।

- चुनौती - लवणीयता और क्षारीयता: पश्चिमी क्षेत्र में जल के अति-उपयोग और इंदिरा गांधी नहर परियोजना के कुछ क्षेत्रों में जल भराव (Waterlogging) के कारण मृदा में लवणीयता और क्षारीयता की समस्या बढ़ गई है।
 - महत्व: भूमि यहाँ के निवासियों के लिए कृषि और पशुपालन का मुख्य आधार है।
-

2. जल (Water) संसाधन

राजस्थान भारत का सबसे जल-संकटग्रस्त राज्य है, जहाँ देश के कुल सतही जल का मात्र 1.16 प्रतिशत ही उपलब्ध है।

- बारहमासी नदियों का अभाव: राज्य में चंबल और माही जैसी कुछ ही नदियाँ बारहमासी हैं। अधिकांश नदियाँ वर्षा-आधारित (Seasonal) हैं।
- भू-जल पर अत्यधिक निर्भरता: कृषि और घरेलू

आवश्यकताओं के लिए भू-जल पर अत्यधिक निर्भरता है। राज्य के अधिकांश विकास खंड 'अति-दोहित' श्रेणी में हैं, जिससे भू-जल स्तर लगातार गिर रहा है।

- **पारंपरिक जल संरक्षण:** जल संकट से निपटने के लिए राजस्थान में प्राचीन काल से ही बावड़ी, टाँके, खड़ीन और झीलें (जैसे जयसमंद, राजसमंद) जैसे पारंपरिक जल संचयन (Water Harvesting) के तरीके विकसित किए गए हैं।
 - **महत्व:** सिंचाई, पेयजल और उद्योगों के लिए जल एक सीमित और महत्वपूर्ण संसाधन है, जिसका विवेकपूर्ण प्रबंधन आवश्यक है।
-

3. पशुधन (Livestock)

राजस्थान अपने पशुधन के लिए प्रसिद्ध है और यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार है, खासकर शुष्क क्षेत्रों में।

- **सर्वाधिक पशुधन:** राजस्थान में पशुधन की संख्या भारत में सर्वाधिक है। पशुपालन ग्रामीण आबादी की

भारत में सर्वाधिक है। पशुपालन ग्रामीण आबादी की आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और यह विषम जलवायु परिस्थितियों में आजीविका की सुरक्षा प्रदान करता है।

- विशिष्ट नस्लें: यहाँ राठी गाय, मालवी भैंस, मारवाड़ी भेड़ और ऊँट (जिसे राज्य पशु का दर्जा प्राप्त है) जैसी उत्कृष्ट नस्लें पाई जाती हैं। यह देश का सबसे बड़ा ऊन उत्पादक राज्य है।
- चुनौती: अत्यधिक चराई से प्राकृतिक चरागाहों का ह्रास हो रहा है और पशु रोगों का प्रबंधन भी एक चुनौती है।
- महत्व: डेयरी, मांस, ऊन, और खाल के उत्पादन से ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

4. वन्यजीव (Wildlife) और वन संपदा

राज्य की भौगोलिक विविधता के कारण यहाँ वन्यजीवों और वनस्पतियों की एक अनूठी विविधता पाई जाती है।

- वन क्षेत्र की कमी: राष्ट्रीय वन नीति के विपरीत,

राजस्थान में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 10% से भी कम वन क्षेत्र है। वनों में सर्वाधिक हिस्सा 'धोकड़ा' वृक्षों का है।

- **वन्यजीव संरक्षण:** राज्य में 5 राष्ट्रीय उद्यान (जैसे रणथंभौर, केवलादेव), 27 वन्यजीव अभयारण्य और 16 संरक्षण रिजर्व (Conservation Reserves) हैं। गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) राज्य पक्षी है, जो विलुप्ति के कगार पर है और थार क्षेत्र में पाया जाता है।
- **बाघ परियोजना:** यहाँ रणथंभौर, सरिस्का, मुकुन्दरा हिल्स और रामगढ़ विषधारी जैसे चार बाघ अभयारण्य हैं, जो बाघ संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **लाठी सीरीज:** जैसलमेर के आसपास का क्षेत्र 'लाठी सीरीज' कहलाता है, जहाँ सेवण घास पाई जाती है, जो गोडावण का प्राकृतिक आवास है।
- **चुनौती:** अवैध शिकार, वनों की कटाई, खनन गतिविधियाँ और मानवीय हस्तक्षेप वन्यजीवों के संरक्षण के लिए बड़ी चुनौतियाँ हैं।

प्रश्न: राजस्थान में औद्योगिकीकरण के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Perspective) का वर्णन करते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओं (Salient Features) का विस्तार से विश्लेषण कीजिए।

1. औद्योगिकीकरण का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Perspective of Industrialization)

राजस्थान में औद्योगिक विकास की यात्रा को तीन मुख्य चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

(क) स्वतंत्रता-पूर्व काल (Pre-Independence Era)

1. **रियासतों पर आधारित विकास:** स्वतंत्रता से पहले, औद्योगिक विकास मुख्य रूप से रियासतों की राजधानी तक सीमित था। उद्योगों का प्राथमिक उद्देश्य स्थानीय शासकों और जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति करना था।
2. **परंपरागत और कुटीर उद्योग:** इस काल में हस्तशिल्प,

हथकरघा, खादी, बंधेज और रंगाई-छपाई जैसे कुटीर और लघु उद्योग प्रमुख थे।

3. आधुनिक उद्योगों का उदय: कुछ आधुनिक उद्योगों की शुरुआत भी हुई:

- सूती वस्त्र मिल: राज्य की पहली सूती वस्त्र मिल, द कृष्णा कॉटन मिल्स लिमिटेड, की स्थापना 1889 में ब्यावर (अजमेर) में सेठ दामोदर दास राठी द्वारा की गई थी।
- सीमेंट फैक्ट्री: पहली सीमेंट फैक्ट्री 1912-1913 में लाखेरी (बूंदी) में स्थापित हुई थी।
- इस काल में औद्योगिक विकास असंतुलित और सीमित रहा, क्योंकि रियासती सरकारों का ध्यान इसमें कम था।

(ख) स्वतंत्रता के पश्चात् (Post-Independence Period)

1. पिछड़ापन: स्वतंत्रता के समय, कमजोर आधारभूत ढांचा (Infrastructure), रेगिस्तानी भू-भाग (60%

असंतुलित और सीमित था।

थार मरुस्थल), और पानी की कमी के कारण राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े राज्यों (बीमारू राज्यों) की श्रेणी में था।

2. सरकारी पहल: केंद्र और राज्य सरकार द्वारा औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास किए गए:

- **वित्तीय संस्थाओं की स्थापना: RIICO**
(राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम), **RFC** (राजस्थान वित्त निगम), और **RAJSICO** (राजस्थान लघु उद्योग निगम) जैसी संस्थाओं की स्थापना हुई।
- **औद्योगिक नीतियों की शुरुआत:** राज्य की प्रथम औद्योगिक नीति की घोषणा 1978 में की गई, जिसका उद्देश्य औद्योगिक वातावरण को सुधारना था।
- **खनिज आधारित उद्योगों पर ज़ोर:** राज्य के खनिज संसाधनों (सीसा, जस्ता, जिप्सम, संगमरमर, आदि) की प्रचुरता के कारण सीमेंट,

संगमरमर और ग्रेनाइट उद्योगों का विकास हुआ।

(ग) उदारीकरण के पश्चात् (Post-Liberalization Era)

1. तेज़ विकास: 1990 के दशक के बाद उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) की नीतियों के कारण राज्य के औद्योगिक विकास को गति मिली।
2. नीतियों में परिवर्तन: तीसरी औद्योगिक नीति (1994) में निजी क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना के लिए प्रोत्साहित किया गया।
3. नवीन नीति (2019): राजस्थान औद्योगिक विकास नीति, 2019 में संतुलित क्षेत्रीय विकास, तकनीकी उन्नयन और पर्यावरण अनुकूल विकास पर विशेष ध्यान दिया गया।
4. निवेश प्रोत्साहन: निवेश को आकर्षित करने के लिए 'वन स्टॉप शॉप' प्रणाली और विशेष निवेश क्षेत्रों का विकास किया गया।

2. औद्योगिकीकरण की मुख्य विशेषताएँ (Salient Features of Industrialization)

राजस्थान के औद्योगिकीकरण की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

(क) खनिज-आधारित उद्योगों की प्रधानता (Dominance of Mineral-Based Industries)

- राजस्थान को खनिजों का अजायबघर कहा जाता है, जो औद्योगिक विकास की एक मुख्य विशेषता है।
- सीमेंट उद्योग: यहाँ चूना पत्थर और जिप्सम की प्रचुरता के कारण सीमेंट उत्पादन में राज्य देश के अग्रणी राज्यों में से एक है।
- संगमरमर (Marble) और ग्रेनाइट उद्योग: मकरान (सफेद संगमरमर) और किशनगढ़ (ग्रेनाइट) जैसे केंद्रों के कारण यह उद्योग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखता है।
- धातु उद्योग: सीसा और जस्ता के उत्पादन में राज्य का

महत्वपूर्ण स्थान है।

(ख) परम्परागत उद्योगों का महत्व (Importance of Traditional Industries)

- **हस्तशिल्प और हथकरघा:** हस्तशिल्प राज्य के निर्यात का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ की रत्न एवं आभूषण, टेक्सटाइल, रंगाई-छपाई और हथकरघा वस्तुएं विश्व भर में प्रसिद्ध हैं।
- **कपड़ा उद्योग:** भीलवाड़ा को 'राजस्थान का मैनचेस्टर' कहा जाता है, जो सूती वस्त्र और वस्त्रों के उत्पादन में एक प्रमुख केंद्र है।

(ग) असंतुलित क्षेत्रीय विकास (Unbalanced Regional Development)

- **औद्योगिक विकास** जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, अजमेर, भिवाड़ी और अलवर जैसे प्रमुख शहरों और उनके आसपास के क्षेत्रों तक ही सीमित रहा है।
- **पश्चिमी राजस्थान (मरुस्थलीय भाग)** आधारभूत ढांचे की कमी, पानी के अभाव और जलवायु की कठोरता

की कमी, पानी के अभाव और जलवायु की कठोरता के कारण औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा है।

(घ) औद्योगिक नीतियों पर निर्भरता (Dependence on Industrial Policies)

- राज्य सरकार ने औद्योगिक विकास को दिशा देने और निवेश आकर्षित करने के लिए समय-समय पर औद्योगिक नीतियाँ (1978, 1994, 2019) घोषित की हैं।
- MSME (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) क्षेत्र के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।
- थ्रस्ट सेक्टर (Thrust Sectors): वस्त्र, कृषि-खाद्य प्रसंस्करण, रत्न एवं आभूषण और इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम डिज़ाइन एवं विनिर्माण (ESDM) जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहन दिया गया है।

(ङ) आधारभूत ढांचे का विकास (Development of Infrastructure)

- **RIICO द्वारा औद्योगिक पार्क (Industrial Parks) और निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क (EPIP) का विकास किया गया है।**
 - **Dedicated Freight Corridor (DFC) और स्वर्णिम चतुर्भुज जैसे राष्ट्रीय गलियारों पर राज्य की स्थिति औद्योगिक विकास को बढ़ावा दे रही है।**
-

3. निष्कर्ष

राजस्थान का औद्योगिकीकरण, यद्यपि खनिज और पारंपरिक हस्तशिल्प पर आधारित एक मजबूत नींव रखता है, फिर भी पिछड़ेपन और क्षेत्रीय असंतुलन की चुनौती से जूझ रहा है। राजस्थान औद्योगिक नीति, 2019 और अन्य सरकारी प्रयास राज्य को एक समावेशी, संतुलित और सतत औद्योगिक विकास की ओर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि राज्य के सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में उद्योग क्षेत्र के योगदान (वर्तमान में प्रचलित मूल्यों पर 27.31 प्रतिशत) को बढ़ाया जा सके।

प्रश्न: राजस्थान में औद्योगिकीकरण के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Perspective) का वर्णन करते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओं (Salient Features) का विस्तार से विश्लेषण कीजिए।

1. औद्योगिकीकरण का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Perspective of Industrialization)

राजस्थान में औद्योगिक विकास की यात्रा को तीन मुख्य चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

(क) स्वतंत्रता-पूर्व काल (Pre-Independence Era)

1. **रियासतों पर आधारित विकास:** स्वतंत्रता से पहले, औद्योगिक विकास मुख्य रूप से रियासतों की राजधानी तक सीमित था। उद्योगों का प्राथमिक उद्देश्य स्थानीय शासकों और जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति

करना था।

2. **परंपरागत और कुटीर उद्योग:** इस काल में हस्तशिल्प, हथकरघा, खादी, बंधेज और रंगाई-छपाई जैसे कुटीर और लघु उद्योग प्रमुख थे।
3. **आधुनिक उद्योगों का उदय:** कुछ आधुनिक उद्योगों की शुरुआत भी हुई:
 - **सूती वस्त्र मिल:** राज्य की पहली सूती वस्त्र मिल, द कृष्णा कॉटन मिल्स लिमिटेड, की स्थापना 1889 में ब्यावर (अजमेर) में सेठ दामोदर दास राठी द्वारा की गई थी।
 - **सीमेंट फैक्ट्री:** पहली सीमेंट फैक्ट्री 1912-1913 में लाखेरी (बूंदी) में स्थापित हुई थी।
 - इस काल में औद्योगिक विकास असंतुलित और सीमित रहा, क्योंकि रियासती सरकारों का ध्यान इसमें कम था।

(ख) स्वतंत्रता के पश्चात् (Post-Independence Period)

- 1. पिछड़ापन:** स्वतंत्रता के समय, कमजोर आधारभूत ढांचा (Infrastructure), रेगिस्तानी भू-भाग (60% थार मरुस्थल), और पानी की कमी के कारण राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े राज्यों (बीमारू राज्यों) की श्रेणी में था।
- 2. सरकारी पहल:** केंद्र और राज्य सरकार द्वारा औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास किए गए:
 - **वित्तीय संस्थाओं की स्थापना:** **RIICO** (राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम), **RFC** (राजस्थान वित्त निगम), और **RAJSICO** (राजस्थान लघु उद्योग निगम) जैसी संस्थाओं की स्थापना हुई।

- औद्योगिक नीतियों की शुरुआत: राज्य की प्रथम औद्योगिक नीति की घोषणा 1978 में की गई, जिसका उद्देश्य औद्योगिक वातावरण को सुधारना था।
- खनिज आधारित उद्योगों पर ज़ोर: राज्य के खनिज संसाधनों (सीसा, जस्ता, जिप्सम, संगमरमर, आदि) की प्रचुरता के कारण सीमेंट, संगमरमर और ग्रेनाइट उद्योगों का विकास हुआ।

(ग) उदारीकरण के पश्चात् (Post-Liberalization Era)

1. तेज़ विकास: 1990 के दशक के बाद उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) की नीतियों के कारण राज्य के औद्योगिक विकास को गति मिली।
2. नीतियों में परिवर्तन: तीसरी औद्योगिक नीति (1994) में निजी क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना के लिए

प्रोत्साहित किया गया।

3. नवीन नीति (2019): राजस्थान औद्योगिक विकास नीति, 2019 में संतुलित क्षेत्रीय विकास, तकनीकी उन्नयन और पर्यावरण अनुकूल विकास पर विशेष ध्यान दिया गया।
 4. निवेश प्रोत्साहन: निवेश को आकर्षित करने के लिए 'वन स्टॉप शॉप' प्रणाली और विशेष निवेश क्षेत्रों का विकास किया गया।
-

2. औद्योगिकीकरण की मुख्य विशेषताएँ (Salient Features of Industrialization)

राजस्थान के औद्योगिकीकरण की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

(क) खनिज-आधारित उद्योगों की प्रधानता

(Dominance of Mineral-Based Industries)

(क) खनिज-आधारित उद्योगों की प्रधानता

(Dominance of Mineral-Based Industries)

- राजस्थान को खनिजों का अजायबघर कहा जाता है, जो औद्योगिक विकास की एक मुख्य विशेषता है।
- सीमेंट उद्योग: यहाँ चूना पत्थर और जिप्सम की प्रचुरता के कारण सीमेंट उत्पादन में राज्य देश के अग्रणी राज्यों में से एक है।
- संगमरमर (Marble) और ग्रेनाइट उद्योग: मकरान (सफेद संगमरमर) और किशनगढ़ (ग्रेनाइट) जैसे केंद्रों के कारण यह उद्योग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखता है।
- धातु उद्योग: सीसा और जस्ता के उत्पादन में राज्य का महत्वपूर्ण स्थान है।

(ख) परम्परागत उद्योगों का महत्व (Importance of Traditional Industries)

- **हस्तशिल्प और हथकरघा:** हस्तशिल्प राज्य के निर्यात का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ की रत्न एवं आभूषण, टेक्सटाइल, रंगाई-छपाई और हथकरघा वस्तुएं विश्व भर में प्रसिद्ध हैं।
- **कपड़ा उद्योग:** भीलवाड़ा को 'राजस्थान का मैनचेस्टर' कहा जाता है, जो सूती वस्त्र और वस्त्रों के उत्पादन में एक प्रमुख केंद्र है।

(ग) असंतुलित क्षेत्रीय विकास (Unbalanced Regional Development)

- औद्योगिक विकास जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, अजमेर, भिवाड़ी और अलवर जैसे प्रमुख शहरों और उनके आसपास के क्षेत्रों तक ही सीमित रहा है।
- पश्चिमी राजस्थान (मरुस्थलीय भाग) आधारभूत ढांचे की कमी, पानी के अभाव और जलवायु की कठोरता के कारण औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा है।

(घ) औद्योगिक नीतियों पर निर्भरता (Dependence on Industrial Policies)

- राज्य सरकार ने औद्योगिक विकास को दिशा देने और निवेश आकर्षित करने के लिए समय-समय पर औद्योगिक नीतियाँ (1978, 1994, 2019) घोषित की हैं।
- MSME (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) क्षेत्र के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।
- थ्रस्ट सेक्टर (Thrust Sectors): वस्त्र, कृषि-खाद्य प्रसंस्करण, रत्न एवं आभूषण और इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम डिज़ाइन एवं विनिर्माण (ESDM) जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहन दिया गया है।

(ङ) आधारभूत ढांचे का विकास (Development of Infrastructure)

विकास किया गया है।

- **Dedicated Freight Corridor (DFC)** और स्वर्णिम चतुर्भुज जैसे राष्ट्रीय गलियारों पर राज्य की स्थिति औद्योगिक विकास को बढ़ावा दे रही है।
-

3. निष्कर्ष

राजस्थान का औद्योगिकीकरण, यद्यपि खनिज और पारंपरिक हस्तशिल्प पर आधारित एक मजबूत नींव रखता है, फिर भी पिछड़ेपन और क्षेत्रीय असंतुलन की चुनौती से जूझ रहा है। राजस्थान औद्योगिक नीति, 2019 और अन्य सरकारी प्रयास राज्य को एक समावेशी, संतुलित और सतत औद्योगिक विकास की ओर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि राज्य के सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में उद्योग क्षेत्र के योगदान (वर्तमान में प्रचलित मूल्यों पर 27.31 प्रतिशत) को बढ़ाया जा सके।